International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 500-505

भारत के पूर्वीभाग में अवस्थित पौराणिक तीर्थों का परिशीलन

कृष्णा देवी[1], डॉ0 निधि रस्तोगी[2]
[1] शोधार्थी, पीएच.डी (संस्कृत), ओ०पी०जे०एस० विश्वविद्यालय, चुरू, राजस्थान, भारत।
[2] सहायक प्रोफेसर, ओ०पी०जे०एस० विश्वविद्यालय, चुरू, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

भारत के पूर्वी भाग के पौराणिक तीर्थों के अन्तर्गत बिहार, असम, उड़ीसा तथा पश्चिमी बंगाल के पौराणिक तीर्थों का वर्णन किया गया है। उनमं से बिहार में हिन्द, पश्चिमी बंगाल में बंगला, असम में असमिया बोली जाती है। इस पूरे भाग में हिन्दी भाषा सरलता से समझ ली जाती है। उत्तर–भारत के समान इस प्रदेश में भी बाजारों में पूड़ी–मिठाई की दुकानें सभी जगह मिलती हैं। फल, शाक, दूध–दही आदि की उत्तम व्यवस्था है। इस प्रदेश के प्रमुख तीर्थों में धर्मशालाएँ एवं पंडे भी हैं और यात्री पंडों के यहाँ भी ठहरते हैं। वर्षों के दिनों में इस भाग की यात्रा कष्टकर होती हैं क्योंकि वर्षा इस भाग में बहुत अधिक होती है। ग्रीष्म में गर्मी और शीतकाल में अधिक सर्दी होती है। इसलिये यात्रियों को गरम कपड़ों का पर्याप्त प्रबन्ध यात्रा में रखना चाहिये। पूर्वी भारत के पौराणिक तीर्थों के दर्शन कर मन शांत एवं एकाग्र हो जाता है। कामाख्या, गया, पटन, गंगा–सागर संगम, वैद्यनाथ आदि पूर्वी भाग के पौराणिक तीर्थ हैं जिनका विवरण अधोलिखित है।

कामाख्या तीर्थ

महापुण्यमय कामाख्या तीर्थ शास्त्रोक्त कामरूप राज्य के अन्तर्गत आता है। कामाख्या तीर्थ को कामरूप के अतिरिक्त कुब्जिका पीठ के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। यथा –

कामाख्या परमं तीर्थ कामाख्या परमं तपः।
कामाख्या परमो धर्मः कामाख्या परमा गतिः।।[1]

कामाख्या तीर्थ 51 शक्तिपीठों (सिद्धपीठ) में से एक है। समस्त शक्तिपीठों में (कामरूप) कामाख्या को सर्वोत्तम माना गया है। कामरूप अति प्राचीन एवं वैचित्र्य स्थान है। तन्त्र–पुराण तथा इतिहासादि में भी विस्तृत रूप से इसका उल्लेख पाया जाता है। कामरूप सम्बन्धी पौराणिक कहानियाँ आज भी भारत के कोने–कोने में प्रचलित हैं। भारतवर्ष में असंख्य तीर्थ विद्यमान हैं। तीन तीर्थ स्थानों में भगवती 'कामाख्या' सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है जैसा कि देवीभागवत पुराण में कहा भी गया है – ''तेषुश्रेष्ठतमः पीठः कामरूपों महामतेः।।''[2]

पौराणिक कथा के अनुसार जब भगवान शिव सती के शव को कंधे पर लेकर घूम रहे थे, तब विष्णु के चक्र से खण्डित होकर उनकेक गुप्तांग वहाँ गिर पड़े थे। तब से देवी सती यहाँ कामाख्या के रूप में प्रसिद्ध हो गयी।[3] महाभारत (देवीपुराण) के 12वें अध्याय में आता है कि सती के वियोग से अत्यन्त दुखित होकर भगवान शङ्कर ने ब्रह्मा तथा विष्णु से पुनः सती प्राप्ति का उपाय पूछा। भगवान विष्णु तथा ब्रह्मा जी के बहुत समझाने पर उन्होंने कहा कि सती की सर्वव्यापकता तथा नित्यता का ज्ञान होने पर भी मैं उनकी पत्नीत्व का अभाव नहीं सह सकता। फिर तीनों जनों ने यहीं तब आरम्भ किया। भगवती ने प्रकट होकर शङ्कर जी को वर दिया कि मैं गंगा तथा पार्वती के रूप में हिमालय के घर अवतीर्ण होकर दोनों रूपों से आप को ही वरण करूँगी और वैसा ही हुआ। कामाख्या तीर्थ पर भगवती साक्षात स्थित है। इस महापीठ के लाल जल से स्नान करके ब्रह्महत्यारा भी भवबन्धन से छुटकारा पा लेता है।[4] कामाख्या तीर्थ स्थल की एक पौराणिक विशेषता यह भी है कि इसी स्थान पर रतिपति कामदेव शिव की क्रोधाग्नि से भस्मीभूत हुये थे एवं उन्हीं की कृपा से कामदेव ने अपना पूर्वरूप भी यहीं प्राप्त किया। अतः इसी कारण इस स्थान का नाम कामरूप पड़ा।[5] इस पवित्र तीर्थ स्थल के अपार श्रद्धा व विश्वास से दर्शन करने पर सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति होती है। भगवती सती की अपार कृपा अपने भक्तों पर सदैव बनी रहती है, जो भक्तिभाव से देवी के योनिमण्डल का दर्शन, स्पर्शन तथा मुद्रा का जलपान करते हैं। वे देवऋण, पितृऋण एवं ऋषिऋण से मुक्त हो जाते हैं।[6]

कामाख्या देवी का पवित्र तीर्थ स्थल आसाम के गोहाटी में स्थित है। ब्रह्मपुत्र नदी की सुन्दर नीलाचल पहाड़ी पर यह देवी स्थान है। कामाख्या देवी के मन्दिर का निर्माण कूचबिहार के राजा शिवसिंह और शिवसिंह द्वारा किया गया। सन् 1564 में कालापहाड़ ने इसे तोड़ डाला था। प्रथम इस मन्दिर का नाम आनन्दाख्य था जो वर्तमान मन्दिर से कुछ दूरी पर है। मन्दिर के समीप ही एक छोटा सा सरोवर है।

वर्तमान समय में कामाख्या देवी की मूर्ति को वार्षिक उत्सवों तथा पर्वपार्वण दिनों में भ्रमण कराया जाता है। तीर्थयात्री सर्वप्रथम कामेश्वरी देवी एवं कामेश्वर शिव का दर्शन करते हैं। तदोपरान्त देवी की महामुद्रा का दर्शन करते हैं। देवी की योनिमुद्रा भाग दस सोपान के नीचे अन्धकार पूर्ण गुफा में अवस्थित होने के कारण वहाँ सदा दीपक का प्रकाश रहता है।

कामाख्या (कामरूप) देवी के स्थान पर कोई भी साधक या भक्त, जिस किसी भी कामना की पूर्ति के लिये देवी की आराधना करता है। देवी शीघ्र प्रसन्न हो उसका मनोरथ पूर्ण करती है।[7] कामरूप देश देवी क्षेत्र के नाम से भी तन्त्रों और पुराणों में वर्णित है। कामरूप देवी का क्षेत्र है इसके समान दूसरा कोई स्थान नहीं है। देवी अन्य स्थानों में दुलर्भ है परन्तु कामरूप के घर–घर में उनका निवास है।[8] यह समस्त भू–मण्डल देवी का महाक्षेत्र माना जाता है।

कालिका तीर्थ

कालिका तीर्थ पूर्वी भारत के प्रमुख अर्थात् पौराणिक तीर्थों में से एक है। यह प्रसिद्ध तीर्थ 51 शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ माँ काली आधिपत्य है। – माँ काली पश्चिमी बंगाल–कोलकाता की

इष्ट व कुल देवी है। कोलकाता क्षेत्र का यह काली तीर्थ अत्यन्त प्रख्यात है। इस स्थान पर माँ काली को कालिका के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस तीर्थ स्थल पर भगवती सती के देह की दाहिने पैर की चार अङ्गुलियाँ गिरी थी। यहाँ की शक्ति 'कालिका' और भैरव 'नकुलीश' है।[9] इस तीर्थ पर महाकाली भव्य मूर्ति के रूप में विराजमान हैं। जिसकी लम्बी लाल जिह्वा मुख के बाहर निकली हुई है। देवी मन्दिर के समीप ही नकुलेश्वर शिव मंदिर अत्यन्त सुप्रसिद्ध है।[10] कालिका मन्दिर भारत देश के महानगर एवं पश्चिम बंगाल की राजधानी कलकत्ता में स्थित है। इस नगर में दुर्गा पूजा को विशेष महत्त्व दिया जाता है। नवरात्रों के दिनों में इस तीर्थ स्थान पर अनेक प्रकार के धार्मिक कार्य जैसे हवन, यज्ञ, भण्डारा, नृत्य, कला आदि पर विशेष महत्त्व देते हुये देवी माँ को प्रसन्न किया जाता है। इस पवित्र तीर्थ स्थल पर तीर्थयात्रा कर जो कोई तीर्थयात्री इस तीर्थ में आगमन करते हैं। उन्हें पग–पग पर अवश्मेघ यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है।[11] यह पवित्र शक्तिपीठ भक्तों के लिये वरदान हैं जो व्यक्ति इस स्थान पर अपार श्रद्धा एवं विश्वास से देवी माँ से कोई भी कामना करता है माँ उसकी सभी मनोकामनाएँ अवश्य पूर्ण करती है।

विभाष शक्तिपीठ

विभाष शक्तिपीठ पश्चिम बंगाल में मिदनापुर जिले में ताम्रलुक स्थान पर स्थित है। वहाँ रूपनारायण नदी के तट पर वर्गभीमा का विशाल मन्दिर ही विभाष शक्तिपीठ के रूप में सुप्रसिद्ध है। विभाष शक्तिपीठ मन्दिर अत्यन्त प्राचीन माना जाता है। इस पवित्र तीर्थ स्थान पर देवी सती के देह का 'बायां टखना' (एड़ी के ऊपर की हड्डी) गिरा था। यहाँ का शक्ति को ''कपालिनी भीमरूपा'' तथा भैरव को ''सर्वानन्द'' कहा जाता है।12

गया

भारत देश का सर्वोत्तम पितृतीर्थ गया है। गया को तीर्थों का अधिपति कहा जाता है। गया क्षेत्र पितृ तीर्थ है। इसमें स्वयं देवदवेश ब्रह्मा निवास करते हैं।[13] यहाँ पर धर्मश्रेष्ठ, ब्रह्मसभा, गया शीर्ष, अक्षयवट तथा ग्रधवट नामक स्थान हैं। ऐसी श्रुति है कि पूर्वकाल में श्वेतवाराहकल्प में यजमान गया ने वहां यज्ञ किया था और उसी के नाम पर गया का नामकरण हुआ।[14] उस यज्ञ में जिस नदी का आह्वान किया गया था। वह आज भी वहाँ विद्यमान है। गया में पितरों को दिया गया भोजन अक्षय हो जाता है। पितर कामना करते हैं कि उनके वंश में कोई ऐसा पुत्र उत्पन्न हो जो गया जाकर वहाँ उनका श्राद्ध करे[15] क्योंकि जो पुत्र गया जाता है वह पितरों को नरक से बचाता है। गया में व्यक्ति को अपने पिता तथा अन्यों को भी पिण्ड देना चाहिए। गया में श्राद्ध करने सभी महापातक नष्ट हो जाते हैं। गया में पुत्र या किसी अन्य द्वारानाम एवं गोत्र के साथ पिण्ड पाने से शाश्वत ब्रह्म की प्राप्ति होती है।[16] गया में तीर्थों की संख्या बहुत अधिक है किन्तु फल्गु नदी, विष्णु पद एवं अक्षयवट तीर्थ सुप्रसिद्ध है।

फल्गु नदी

फल्गु नदी को महानदी कहा जाता है। यह नदी गया के पूर्व में बहती है।[17] यात्री फल्गु नदी में पिण्डों के साथ श्राद्ध एवं तर्पण करता है। फल्गु श्राद्ध से कर्ता एवं वे लोग, जिनके लिये कर्ता श्राद्ध करता है वह मुक्ति पा जाते हैं। फल्गु जलधारा के रूप में आदि–गदाधर हैं।[18] फल्गु स्नान से व्यक्ति अपने दस पितरों एवं दस वंशजों की रक्षा करता है। इसके उपरांत यात्री वासुदेव संकर्षण, प्रद्युमन अनिरुद्ध, विष्णु एवं श्रीधर को प्रणाम करके गदाधर को पंचामृत से स्नान कराता है।[19]

विष्णुपद

फल्गु के पश्चिम में एक चट्टान पर विष्णु चरणों के ऊपर विष्णु–पद का मन्दिर निर्मित हुआ है। गया कि यही प्रधान मन्दिर है। मंदिर में अष्टकोण वेदी पर भगवान विष्णु का चरण–चिह्न बना है। विष्णु पद पर पिण्डदान करने से यात्री एक सहस्र कुलों की रक्षा करता है और अपने को कल्याणमय, अक्षय एवं विष्णुलोक में ले जाता है।

अक्षयवट

गया के सर्वोत्तम तीर्थों में अक्षयवट का अपना महनीय महत्त्व है। ब्रह्मसरोवर के पास ही अक्षयवट है। चहार–दीवारी से घिरा विस्तृत पक्का आंगन है जिसके मध्य वटवृक्ष है इसके समीप ही वटेश्वर महादेव का मन्दिर है। अक्षयवट में श्राद्ध करना चाहिये और ब्रह्मा द्वारा प्रतिष्ठापित गया है ब्राह्मणों को दानों एवं भोजन से सम्मानित करना चाहिये। जब वे परितृप्त हो जाते हैं तो पितरों के साथ देव भी तृप्त हो जाते हैं।[20] अक्षयवट में ऐसा माना गया है कि गया में व्यक्ति अपना भी श्राद्ध कर सकता है किन्तु तिल के साथ नहीं।[21] इसके उपरान्त यात्री को अक्षयवट को प्रणाम कर मन्त्र के साथ उसकी पूजा करनी चाहिये। अतः गया में पितरों को जो भी पिण्डदान दिया जाता है। उनके पितर पुनः पिण्ड की अपेक्षा नहीं करते हैं। गया तीर्थ पर आज भी तीर्थयात्री लाखों की संख्या में यात्रा करते हैं और अपने पितरों को पिण्ड अर्पण करते हैं। तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिये खान–पान विश्राम आदि के उचित प्रबन्ध किये गये हैं। जिससे तीर्थयात्रियों को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नही करना पड़ता है। गया का तिल–तिल पवित्र है। गया में ऐसा कोई भी स्थल नहीं है जो पवित्र न हो।[22] गया तीर्थ की यात्रा करने से अन्य तीर्थ की यात्रा करने की अपेक्षा नहीं रहती है।

राजगृह तीर्थ

राजगृह सनातन धर्मी हिन्दू, बौद्ध तथा जैन – तीनों का ही तीर्थ है। मगध की राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) से पूर्व राजगृह ही थी। आज भी राजगृह पवित्र तीर्थभूमि है। राजगृह में अनेक दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ एक छोटी नदी है जिसे सरस्वती नदी कहते हैं। सरस्वती नदी के पास एक ब्रह्म कुण्ड है। ब्रह्मकुण्ड के पास सरस्वती को प्राची सरस्वती कहा गया है। सरस्वती के अतिरिक्त यहाँ केदारनाथ, सीताकुण्ड, वैतरणी, रत्नगिरि, उदयगिरि, वैकुण्डतीर्थ, बाणगङ्गा आदि तीर्थ सुप्रसिद्ध हैं। राजगृह एक प्रधान बौद्ध तथा जैन तीर्थ है। कहा जाता है कि भगवान् बुद्ध वर्षा के चार महीने यहीं व्यतीत करते थे तथा यहीं पर ही इक्कीसवें तीर्थङ्कर मुनि सुव्रतनाथ का जन्म हुआ था। मुनिराज धनदत्त और महावीर के कई गणधर भी इसी स्थान से मोक्ष प्राप्त किये थे। पुराणों तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में राजधर्म के महात्मा के विषय में कहा गया है कि तीर्थसेवी पुरुष राजगृह को जाए। वहाँ स्नान करके पुरुष कक्षीवान् के सदृश आनन्द पाता है। वहाँ पवित्र होकर पुरुष यक्षिणी नैवैद्य भक्षण करे। इससे वह ब्रह्महत्या से मुक्त हो जाता है।[23] हिन्दू, बौद्ध तथा जैनों की इस परम पवित्र भूमि राजगृह में वर्ष के पुरुषोत्तम मास को अधिक पावन माना गया है। इस महीने यहाँ तीर्थ यात्रियों की संख्या बहुत अधिक होती है।

वैद्यनाथधाम

श्रीवैद्यनाथ धाम शिव और शक्ति के ऐक्य का प्रतीक है। श्रीवैद्यनाथ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से एक है। यह ज्योतिर्लिङ्ग बिहार के

सन्थल परगना क्षेत्र में प्राचीन तीर्थस्थल देवगढ़ में स्थित है। कुछ लोग हैदराबाद क्षेत्र में परली वैद्यनाथ को द्वारदश लिङ्गों में मानते हैं किन्तु वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग चिताभूमि में बताया गया है। अतः यही वैद्यनाथधाम का उपयुक्त स्थान है।[24] वैद्यनाथधाम का मुख्य मन्दिर श्रीवैद्यनाथ मन्दिर ही है। बहुत से लोग सांसारिक कामनाओं से वैद्यनाथ आते हैं और संकल्पपूर्वक निर्जलव्रत करके मन्दिर में धरना देकर पड़े रहते हैं। इनमें अधिकांश लोग क्षुधा–पिपासा न सह सकने के कारण लौट जाते हैं किन्तु जो बराबर टिके रहते हैं। उनकी कामना अवश्य पूर्ण होती है। वैद्यनाथेश्वर नामक यह ज्योतिर्लिङ्ग तीनों लोकों में प्रसिद्ध है तथा सज्जनों को भक्ति और मुक्ति देने वाला है।[25] वैद्यनाथधाम के ऐतिहासिक कथानक के विषय में बात की जाए तो कहा जाता है कि प्राचीन काल में लंकापति रावण ने भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की थी। उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर शंकर जी ने उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिए और वरदान मांगने को कहा। तब लंकापति रावण ने भगवान शिव को लंका में निवास करने को कहा। तब भगवान शिव ने उसे एक लिंग दिया और कहा कि वह लंका में जाकर उसे स्थापित कर दे; किन्तु भगवान शिव ने उसे सावधान कर दिया कि मार्ग में कहीं पृथ्वी पर वह लिंग न रखे। [26] देवता नहीं चाहते थे कि यह लिङ्ग लंका पहुँचे। तभी वृद्ध ब्राह्मण का वेश बनाए भगवान विष्णु वहाँ पहले से खड़े थे। रावण ने कुछ क्षण के लिये वृद्ध ब्राह्मण को लिंग को पकड़े रहने को कहा। रावण के उदर में तो वरुण देव बैठे थे, उसकी लघु शीघ्र पूरी कैसे हो सकती थी। इधर वृद्ध ब्राह्मण ने कहा– कि मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। इस स्थल पर रखा यह लिङ्ग इतना कहकर वे चले गये। रावण निवृत होकर उठा और उसने लिङ्ग उठाने की कोशि की तो उसमें वह असफल हो गया। यह शिवलिंग तो पाताल तक चला गया था। भूमि के ऊपर तो यह आठ अंगुल शेष रहा था। निराश होकर रावण ने चन्द्रकूप नामक कूप बनाया, उसमें सब तीर्थों का जल एकत्र करके उसने शिवलिङ्ग का उसी कूप के जल से अभिषेक किया। तत्पश्चात् उसने लंका की ओर प्रस्थान किया। उस लिङ्ग में शिवजी को प्रत्यक्षरूप में देखकर देवताओं ने उनकी प्रतिष्ठा कर उनका वैद्यनाथ नाम रखा।[27]

वैद्यनाथेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शनों के लिये देश–विदेश से तीर्थयात्री आते हैं। तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए अनेकों धर्मशालाएँ बनाई गई हैं। जिससे तीर्थयात्रियों को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है। वैद्यनाथ मन्दिर के घेरे में ही पुष्पादि तथा तीर्थों का जल भी बिकता है। मन्दिर के घेरे में 21 मन्दिर और भी है यथा : गौरी मन्दिर, कार्तिकेय मन्दिर, गणपति मन्दिर आदि प्रमुख हैं। वैद्यनाथ का यह मन्दिर मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए सदा हितकारी है। इस पवित्र स्थल में भगवान शिव ने मनुष्यों को यह आशीर्वाद दिया था कि 'मैं तुम्हें सदा स्वस्थ बनाये रखूँगा'। अतः यह उत्तम एवं दिव्य ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन तथा पूजन करने से सभी पापों का नाशक तथा मुक्ति देने वालों में श्रेष्ठ है। वैद्यनाथ धाम ज्योतिर्लिङ्ग के अतिरिक्त शक्तिपीठ के रूप में भी सुप्रसिद्ध है। वैद्यनाथ धाम 51 शक्तिपीठों में से एक पीठ है। यह शक्तिपीठ चिताभूमि में ही स्थित है। जहाँ भगवान शंकर ने देवी सती के देह का दाह संस्कार किया था। भगवती सती का हृदयदेश वैद्यनाथधाम की पावन नगरी में गिरा था। इस शक्तिपीठ को 'हार्दपीठ' या 'हृदयपीठ' भी कहा जाता है। हृदयपीठ के समान शक्तिपीठ सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमण्डल में कहीं नहीं है।[29] यह शक्तिपीठ वैद्यनाथ मन्दिर के समीप ही स्थित है। इस शक्तिपीठ को गौरी मन्दिर के नाम से भी अभिहित किया जाता है। इसमें एक ही सिंहासन पर श्री जयदुर्गा तथा त्रिपुरसुन्दरी की दो मूर्तियाँ विराजमान हैं। देवी सती को जहाँ जयदुर्गा के नाम से मान्यता प्राप्त है। भगवान वैद्यनाथ ही उनके भैरव हैं[30] वैद्यनाथधाम बंगलामुखी का सर्वोत्कृष्ट स्थान है तथा यहाँ की शक्ति को आरोग्या नाम से भी अभिहित किया जाता है। इस पवित्र स्थल के दर्शन कर मनुष्य पापों से मुक्त होकर आरोग्यता को प्राप्त होते हैं।

भुवनेश्वर तीर्थ

उत्कल या उड़ीसा में, कटक से लगभग 20 मील की दूरी पर यह रुद्रतीर्थ है। इस रुद्रतीर्थ को पुराणों में एकाम्रक के नाम से जाना जाता है। प्राचीन काल में यहाँ एक आम का पेड़ था। इसी से इसका एकाम्रक नाम पड़ा। किन्तु आधुनिक समय में इसे भुवनेश्वर कहा जाता है। इसका एक अन्य नाम कृतिवास भी है।[31] भुवनेश्वर काशी के समान ही शिव–मन्दिरों का नगर है। यहाँ कई सहस्र मन्दिर थे। अब भी मन्दिरों की संख्या कई सौ है। लोग इसे उत्कल–वाराणसी और गुप्तकाशी भी कहते हैं। भगवान शंकर ने इस क्षेत्र को प्रकट किया, इससे यह शाम्भव क्षेत्र भी कहलाता है। इस तीर्थ स्थल को पापनाशक वाराणसी के सदृश और आठ उपतीर्थों वाला कहा गया है। श्रीलिङ्गराज मंदिर ही भुवनेश्वर का मुख्य मन्दिर है। श्रीलिङ्गराज का ही नाम भुवनेश्वर है। इस मन्दिर का निर्माण 10वीं शती में हुआ था। यह मंदिर भगवान शिव के एक रूप हरिहर को समर्पित है। यहाँ वस्तुतः बुद्धबुद्ध लिङ्ग है। शिला में बुदबुदाकर उठे हुए अङ्कुर भागों को बुदबुद लिङ्ग कहा जाता है। यह चक्राकार होने से हरि–हरात्मक लिङ्ग माना जाता है और हरिहरात्मक मानकर हरि–हर मन्त्र से इनकी पूजा होती है। पौराणिक कथाओं में भुवनेश्वर के विषय में कहा जाता है कि प्राचीन काल में काशी में सभी तीर्थाधिदेवों के बस जाने पर भगवान शङ्कर को एकान्त में रहने की इच्छा हुई। देवर्षि नारद जी ने एकाम्रकक्षेत्र की प्रशंसा की। यहाँ आकर शङ्कर जी ने क्षेत्र पति अनन्त वासुदेव जी से कुछ निवास की अनुमति माँगी। भगवान वासुदेव ने शङ्कर जी को यहाँ नित्य निवास का अनुरोध करके रोक लिया। तब से भगवान शङ्कर जी यहाँ लिङ्ग के रूप में विराजमान हो गये। पुरुषोत्तम पुरी में भुवनेश्वर का यह लिङ्ग सुप्रसिद्ध है।[32]

कोणार्क मन्दिर

उड़ीसा राज्य के पवित्र शहर पुरी के पश्चिम से लगभग 24 मील की दूरी पर कोणार्क का सूर्य मन्दिर अवस्थित है। कोणार्क को कोणादित्य नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। कोणार्क का अर्थ है 'कोण का सूर्य।' कोनाकोन सम्भवतः इसका प्राचीन नाम है। कोणार्क भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। यह सुप्रसिद्ध मन्दिर सूर्य देव को समर्पित है। कोणादित्य नाम से प्रसिद्ध सूर्य को देखने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।[33] मंदिर का शिखर 180 फुट और मण्डप 140 फुट ऊँचा था।[34] कोणार्क को प्राचीन पद्मक्षेत्र कहा जाता है। एक बार श्रीकृष्णचंद्र के पुत्र साम्ब को कुष्ठ हो गया था। भगवान की आज्ञा से इस स्थान पर आकर कोणादित्य की आराधना करने से ही वह कुष्ठ दूर हुआ। साम्ब ने ही सूर्य–मूर्ति स्थापित की थी। सूर्य मन्दिर का निर्माण राजा नरसिंह देव ने 13वीं शताब्दी में करवाया था। यह मंदिर भारत की मध्यकालीन वास्तुकला का अनोखा उदाहरण है। यह सूर्य–मन्दिर अपनी कला के लिये शिव का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर कहा जाता है। यह सूर्य देव का विशाल मन्दिर है। कोणार्क सूर्य मन्दिर समय की गति को भी दर्शाता है। जिसे सूर्य देवता नियंत्रित करते हैं। पूर्व दिशा की ओर जुते हुए मन्दिर के सात घोड़े सप्ताह के सातों दिनों के प्रतीक हैं।[35] जोड़ी पहिए दिन के चौबीस घण्टे दर्शाते हैं। वहीं इनमें लगी 8 ताड़िया दिन के

आठो प्रहर की प्रतीक स्वरूप हैं। कुछ लोगों का मानना है कि 12 जोड़ी पहिए साल के 12 महीनों को दर्शाते हैं। 15वीं शताब्दी में मुस्लिम सेना ने मन्दिर को तोड़ा और लूटा था तब सूर्य मन्दिर के पुजारियों ने यहाँ स्थापित सूर्य देवता की मूर्ति पूरी में ले जाकर सुरक्षित रख दी। फिर मन्दिर किसी कारण से भूमि में कुछ धँस गया। अब मूल विमान (मन्दिर) तो है ही नही, केवल सम्मुख के भोगमण्डप का कुछ भाग खड़ा है। इस मन्दिर के पीछे एक सूर्यपत्नी संज्ञा का मन्दिर है। वह भी भग्न दशा में है। मन्दिर के समीप ही चन्द्रभागा नदी बहती है। यहाँ माघशुक्ल सप्तमी को स्नान महापुण्यप्रद माना जाता है। यहाँ स्नान करने पर सूर्य देव देवों के वीर्य, तप, योग एवम् सत्व के अनुसार प्राणियों को ताप प्रदान करते हैं तथा पितरों, देवों एवम् मनुष्यादि को तृप्त करते हैं[36] और जो मनुष्य तीनों लोकों को प्रकाशि करने वो आकाशबिहारी सूर्यदेव की उपासना करते हैं। वे सुखों के भोक्ता होते हैं।[37] अतः कहा जाता है कि कोणार्क मन्दिर में त्रिलोकी में विख्यात सहस्र किरण युक्त सूर्य का दर्शन करने से ज्ञानवान होकर मुक्ति प्राप्त होती है38 और समस्त पापों का विनाश होता है।

गंगा–सागर संगम तीर्थ

गंगा–सागर तीर्थ को सागर द्वीप या गंगा–सागर संगम भी कहा जाता है। यह पापनाशक तीर्थ कोलकाता शहर से 150 किलोमीटर की दूरी में स्थित है। यह तीर्थ पश्चिम बंगाल, सरकार के नियंत्रण में है। कोलकाता से गंगा–सागर जाने के लिये जहाज एवं नावें का प्रयोग किया जाता है। यह तीर्थ एक द्वीप के रूप में है। गंगा सागर तीर्थ पर पुण्यतम गंगा एवं विशाल सागर (समुद्र) का संगम (मिलन) होता है। गंगा सागर प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ है। प्रत्येक वर्ष मकर संक्रान्ति के अवसर पर लाखों हिन्दू श्रद्धालुओं का यहाँ ताता लगता है जो गंगा नदी एवं सागर के संगम में स्नान करने के इच्छुक होते हैं। इस स्थान पर एक मन्दिर भी है जो कपिल मुनि के प्राचीन आश्रम स्थल पर व्यवस्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार कपिल मुनि के श्राप के कारण राजा सगर के 60 हजार पुत्रों की इसी स्थान पर तत्काल मृत्यु हो गई थी। उनके मोक्ष के लिए राजा सागर के वंश के राजा भगीरथ गंगा को पृथ्वी पर ले आये थे। महापुण्यतम गंगा का नाम श्रवण होते ही आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त होता है। इसके जल का जब स्पर्श किया जाता है या जब कोई इसमें डुबकी लगाता है या जब इसका नाम लिया जाता है तो गंगा दिन–प्रतिदिन प्राणियों को पवित्र करती है। जब सहस्रों योजन दूर रहने वाले लोग 'गंगा' नाम का उच्चारण करते हैं तो तीन जन्मों के एकत्र पाप नष्ट हो जाते हैं।[39] यह पुण्यमयी गंगा सर्वप्रथम सीता, अलकनंदा, सुचक्षु, एवं भद्रा नामक चार विभिन्न धाराओं में बहती है और अलकनन्दा सप्तमुखों में होकर समुद्र में गिरती है।[40] जिसे गंगा–सागर संगम की संज्ञा दी गई है। गंगा–सागर तीर्थ में मकर–संक्रान्ति पर विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। मेला प्रायः पाँच दिन चलता है। इसमें स्नान तीन दिन होता है। साधारण दिनों की अपेक्षा अमावस पर स्नान करने से सौ गुना फल प्राप्त होता है और संक्रान्ति पर स्नान करने से सहस्र गुणा, सूर्य या चन्द्र के ग्रहण पर स्नान करने से सौ लाख गुना और सोमवार के दिन चन्द्रग्रहण पर या रविवार के दिन सूर्य–ग्रहण पर स्नान करने से असंख्य फल प्राप्त होता है।[41]

गंगा–सागर तीर्थ में तीर्थयात्री प्रायः रेत की य्या बनाते हैं। संक्रान्ति के दिन समुद्र से प्रार्थना एवं प्रसाद–चढ़ाया जाता है और स्नान किया जाता है। फिर मुण्डन एवं पिण्डदान कार्य किया जाता है। जो मनुष्य पितरों एवं देवताओं की पूजा में तत्पर रहकर नित्य स्नान कराकरै तो उसके करने पर पितरलोक चिरकाल तक प्रसन्न रहते हैं और अन्त में अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है।[42] अतः इस प्रकार कहा जाता है कि गंगा–सागर तीर्थ सम्पूर्ण कामनाओं की एवं पापों का नाश करने वाला तीर्थ है।

जगन्नाथ धाम

भारत देश की आस्था का केन्द्र श्री जगन्नाथ धाम चार परम पावन धामों में से एक है। ऐसी मान्यता है कि सतयुग में बदरीनाथ, त्रेता में रामेश्वरम, द्वापर में द्वारकापुरी और कलियुग में श्रीजगन्नाथ पुरी पावनकारी धाम है। जगन्नाथ धाम उड़ीसा राज्य के पुरी क्षेत्र में स्थित है। जगन्नाथ धाम भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में सुप्रसिद्ध हैं। यह परम पवित्र धाम भगवान जगन्नाथ अर्थात् कमललोचन, शंख–चक्र–गदाधारी पीताम्बर तथा कंस और केशी संहर्ता भगवान कृष्ण को समर्पित है।[43] इस पवित्र तीर्थ पर भगवान कृष्ण के साथ–साथ बलराम या बलभद्र और सुभद्रा की भी पूजा होती है। इस तीर्थ पर जो मनुष्य देव राक्षसों से वन्दनीय कृष्ण, बलराम तथा सुभद्रा के दर्शन करते है वे निःसन्देह धन्यवादार्ह हैं।[44] उड़ीसा अर्थात् उत्कल प्रदेश के प्रधान देवता श्री जगन्नाथ जी ही माने जाते हैं। राधा और श्रीकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रतीक स्वयं श्री जगन्नाथ जी हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा इंद्रधुम्न भगवान जगन्नाथ को शबर राजा से यहाँ लेकर आये थे तथा उन्होंने ही मूल मन्दिर का निर्माण करवाया था जो बाद में नष्ट हो गया। आधुनिक समय में अवस्थित 65 मीटर ऊँचे मन्दिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में चोलगंगदेव तथा अनंगभीम देव ने करवाया था।[45]

जगन्नाथ पुरी के निज मन्दिर में 16 फुट लम्बी, 4 फुट ऊँची वेदी है। इसे रत्नवेदी कहते हैं। वेदी के तीन ओर 3 फुट चौड़ी गली है जिससे यात्री श्रीजगन्नाथ की परिक्रमा करते हैं। इस वेदी पर श्री जगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलराम जी की मुख्य मूर्तियाँ विराजमान हैं। श्री जगन्नाथ जी का श्याम वर्ण है। वेदी पर एक ओर 6फुट लंबा सुदर्शन चक्र प्रतिष्ठित है। यहीं नीलमाधव, लक्ष्मी तथा सरस्वती की मूर्तियाँ भी हैं। श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलराम जी की मूर्तियां अपूर्ण हैं। उनके हाथ पूरे नही बने हैं। मुखमण्डल भी सम्पूर्ण निर्मित नहीं है। तब भी इस पावन तीर्थ पर जो व्यक्ति सब कालों में सोते–उठते सदा इन तीनों के दर्शन करते हैं वे विष्णुलोक को जाते हैं।[46] निज मन्दिर से थोड़ी दूरी पर वट वृक्ष है जिसे कल्पवृक्ष भी कहते हैं। उसके नीचे बाल मुकुन्द (वटपत्रशायी) के दर्शन होते हैं। वट वृक्ष की परिक्रमा भी की जाती है, जो व्यक्ति पुरुषोत्तम क्षेत्र के कल्पवृक्ष के समीप देहत्याग करते हैं। वे निःसन्देह मोक्ष प्राप्त करते हैं।[47] आषाढ़ शुक्ल द्वितीय को श्रीजगन्नाथ जी की रथयात्रा होती है यह पुरी का प्रधान महोत्सव है। तीन अत्यन्त विशाल रथ होते हैं। पहले रथ पर श्री बलराम जी, दूसरे पर सुभद्रा तथा सुदर्शनचक्र, तीसरे पर श्री जगन्नाथ जी विराजमान होते हैं। यह महोत्वस पूरे नौ दिन चलता है। जगन्नाथ पुरी में भगवान जगन्नाथ के दर्शनों के लिये देश–विदेश से तीर्थ यात्री आते हैं। कहा जाता है कि अन्य तीर्थों में दस हजार वर्षों तक तप करने से जितना फल प्राप्त होता है। उतना फल पुरुषोत्तम में एक मास तक तप करने से होता है। इसके अतिरिक्त जो वर्ष में चार मास पुरुषोत्तम क्षेत्र में रहते हैं वे पृथ्वी पर समस्त तीर्थ यात्राओं के फल से अधिक फल प्राप्त करते हैं।[47] पुरुषोत्तम पुरी में सागरस्नान कभी भी किया जा सकता है किन्तु पूर्णिमा के दिन का स्नान अति महत्त्वपूर्ण कहा जाता है।[48] यहाँ स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतः जगन्नाथ धाम की यात्रा करने से मनुष्य की समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

युगाद्या तीर्थ

पश्चिम बंगाल के वर्दमान जिले में माँ सती का शक्तिपीठ है। यहाँ का शक्तिपीठ देवी युगाद्या को समर्पित है। युगाद्या तीर्थ (शक्तिपीठ) में देवी सती के देह का दक्षिण चरण का अँगूठा गिरा था। यहाँ की शक्ति का नाम 'युगाद्या' या भूतधात्री एवं भैरव क्षीरकष्टक है।49 बंगाल भाषा के अकेक ग्रंथों में युगाद्या देवी की कथा वर्णित मिलती है।50 कहा जाता है कि त्रेतायुग में लंका के राजा रावण के पाताल निवासी पुत्र महिरावण ने देवी काली की पूजा की थी, उस देवी का नाम युगाद्या था। राम–रावण युद्ध के समय में रावण का पुत्र महिरावण राम और लक्ष्मण को पाताल ले गया। पवनपुत्र हनुमान ने पाताल में महिरावण और अहिरावण का सिर काट कर देवी को उपहार में दे दिया और राम–लक्ष्मण का उद्धार किया। उद्धार के पश्चात् प्रस्थान के समय हनुमान जी को देवी ने आदेश दिया कि मुझे यहाँ से ले चलो। जनश्रुतियों के अनुसार हनुमान जी उन पातालनिवासिनी देवी युगाद्या को मृत्युलोक में क्षीरग्राम में ले आये। यहाँ मृत्युलोक की पीठदेवी भूतधात्री महामाया के साथ देवी युगाद्या की भद्रकाली मूर्ति एक हो गयी और देवी का नाम 'युगाद्या' या 'योगाद्या' प्रसिद्ध हो गया।51 पश्चिमी बंगाल का योगाद्या तीर्थ भक्तों की आस्था का प्रतीक है। इस तीर्थ स्थान की देवी योगाद्या पश्चिमी बंगाल के लोगों की कुल देवी भी है। बंगाली औरतें अपने सुहाग की लम्बी आयु के लिये इस तीर्थ स्थान में सुहाग की पिटारी चढ़ाती हैं। नवरात्रि, शिवरात्रि, जन्माष्टमी, दुर्गाष्टमी इत्यादि धार्मिक उत्सवों में इस तीर्थ स्थल पर भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है।

संदर्भ

1. तीर्थङ्क, पृष्ठ 186
2. दे० पु० 12/30
3. धर्मशास्त्र का इतिहास, 14/1418
4. यत्र साक्षाद् भगवती स्वयमेव व्यवस्थिता।
   तत्र गत्वा महापीठे स्नत्वा लोहित्य वारिणि।।
   ब्रह्महापि नरः सद्यो मुच्यते भवबन्धनात्। देवी० पु० 12/32
5. शम्भुनेत्रानिर्दग्धः काम शम्भोरनुग्रहात्।
   तत्र रूपं यतः प्राप कामरूपं ततोऽभ्रवत्।। का. पु. 51/67
6. ऋणानि त्रीव्यपाकर्तुं यस्य चितं प्रसीदीत।
   स गच्छेन परया भक्तया कामाख्या योनि सन्निधि।।
   योगिनीतन्त्र एकादश पटल, 38
7. कामरूपं महापीठं सर्वकाम फलप्रदम्।
   कलौ शीघ्रफलं देवी कामरूपे जपा स्मृतः।। कुब्जिका तन्त्र, सप्तम् पटल
8. कामरूपं देवीक्षेत्र कुत्रापि तत् समं न च।
   अन्यत्र विरला देवी कामरूपे गृहे गृहे।। तन्त्रचूड़ामणि, पीठनिर्णय, 24
9. नकुलीशः कालीपीठे दक्षपादऽङगुलो च मे।
   सर्वसिद्धि करी देवी कालिका तत्र देवता।। तन्त्रचूड़ामणि, पीठनिर्णय 27
10. तीर्थङ्क, पृ. 179
11. तीर्थयात्रा समासाद्य यदेकोऽप्यत्र गच्छति।
    पदे–पदेऽश्वमेघस्य फल प्राप्नोति गानवः।। येानिनीतन्त्र 11/20
12. कपालिनी भीमरूपा वामगुल्फो विभाषके।
    भैरवञ्च महादेव सर्वानन्दः शुभप्रदः।। तन्त्र. पीठ. (महा.) 42
13. पितृ तीर्थ गयानाम सर्वतीर्थवरं स्मृतम्।
    यत्रास्ते देवदेवेशः स्वयमेव पितामहः।। ना.पु., उ. भा. 44/4
14. गयोपि चाकरोद्याग बहवन्न बहुदक्षिणम्।
    गयापुरी तेत नाम्ना .....।। त्रिस्थलीहेतु, पृ. 340
15. तीर्थङ्क, पृ. 161
16. आत्मजोवान्यजो वापि गया भूमौ यदा यदा
    यत्नाम्ना पातयेत्पिण्डं तत्रन्येद ब्रह्म शाश्वतम्।। वायु. पु० 105/24
17. तीर्थङ्क, पृ. 161
18. गंगा पादोयकं विष्णोः फलगुर्ह्यादिगदाधरः।
    स्वयं हिद्रवरूपेण तरगाद् गंगाधिकं विदु।। वायु. पु. 111/16
19. पञ्चामृतेन च रनानमचीयां तु विशिष्यते।। ना. उ. भा. 43/53
20. ये युष्मानन्पूजयिष्यन्ति गयायामागता नराः।
    हव्यकव्यैर्धनैः श्रौद्धस्तेषां कुलशतं वजेत्।।
    नरकात् स्वर्गलोकाय स्वर्गलोकात्परां गतिम्। अग्नि० पु० 114/39–40
21. आत्मनस्तु महाबुद्धे गयायां तु तिलैर्विना।
    पिण्डनिर्वपणं कुर्यात्तथा चअन्यत्र गोगजा। वायु पु० 83/34
22. ततो राजगृह गच्छेत तीर्थसेवी नराधिपः।
    उपस्पृश्य ततस्तत्र कक्षीवानिव मोदत्ते।।
    यक्षिव्या नैत्यकं तत्र प्राश्नीत पुरुषः शुचिः।
    यक्षिव्यास्तु प्रसादेन मुच्यते ब्रह्महत्या।। पद्म० पु० 38/22, 23
23. पूर्वोत्तरे प्रज्वलिका निधाने, सदा वसन्तं गिरिजासमेतम्।
    सुरासुराराधित पादपद्मं श्री वैद्यनाथं तमहं नमामि।।
    द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम्
24. वैद्यनाथेश्वरं नाम्ना तल्लिङ्गमभवन्मुने।
    प्रसिद्धं त्रिषु लोकेषु भुक्तिमुक्तिप्रदं सताम।।
    श. पु. अ. 28, तृतीय शतरुद्रसंहिता श्लो. 20
25. तीर्थङ्क, पृ. 174
26. प्रत्यक्षं तं सदा दृष्ट्वा प्रतिष्ठात्य च ते सुराः।
    वैद्यनाथेति सम्प्रोच्य नत्वा दिवं ययुः।। शि.पु. अ. 28, तृतीय शतरूद्रसंहिता श्लो. 25
27. ज्योतिर्लिङ्गमिदं श्रेष्ठं दर्शनात्पूजनादपि।
    सर्वपापहरं दिव्य मुक्ति वर्द्धनमत्तमम्।। शि.पु.अ. 28, तृतीय शतरूद्रसंहिता श्लो. 21
28. हार्दपीठस्य सदृशो नास्ति भूगोलमण्डले। प. पाताल खण्ड 3/45
29. हृदपीठं वैद्यनाथे वैद्यनाथस्तु भैरवः।
    देवता जयदुर्गास्या।। तन्त्र. पीठ 10
30. धर्मशास्त्र का इतिहास, पृ. 1411
31. पुरुषोत्तमपुर्या तु भुवनेशः सुसिद्धिदः। शि.पु. अ. 28 चतुर्थ रुद्रसंहिता श्लो. 17
32. तीर्थङ्क, पृ 194
33. कोणादित्य इति ख्यातस्तस्मिन् देशे व्यवस्थितः।
    य दृष्ट्वा भासकर मर्त्यः सर्त्वपापैः, प्रमुच्यते।। ब्र. 18/19
34. धर्मशास्त्र का इतिहास, 3/16/1425
35. अध्यान 175
36. कूर्म पुराण एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 178
37. त्रैलोक्य दीपकं देव भास्कर गगनेचरम्।
    ये संश्रयन्ति मनुजास्ते स्युः सुखस्य भाजनम्।। ब्रह्म पु० 18/39
38. सहस्र किरणदेवंभानुं त्रैलोक्य विश्रुतम्।
    द्वद्वामुक्तिमवाप्नोति नरोज्ञान समन्वितः।। वाम० पु० 35/28
39. श्रुताभिलषिता दृष्टा स्पृष्टा पीतावगाहिता।
    या पावयति भूतानि कीर्तिता च दिने दिने।।
    गंगा गंगेति यैर्नाम योजनानां शतेष्वपि।
    स्थितैरूच्चारितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।। विष्णु. पु.

2/8/120–121
40. तथैवालकनन्दा च दक्षिणादेत्य भारतम्।
प्रयाति सागरं भित्त्वा सप्तभेदा द्विजोतमाः।। कूर्म.पु. 1/46/31
41. दर्शे शतगुणं पुण्यं संक्रान्तौ च सहस्रकम्।
चन्द्रसूर्यग्रहे लक्षं व्यतीपाते त्वनन्तकम्।।
सोमग्रहः सोमदिने रविवारे रवेर्ग्रहः।
तच्चूडामणिपर्वाख्यं तत्र स्नानमसंख्यकम्।। स्क० पु०, का० 27/129–131
42. तत्राभिषेकं कुवीतिपितृदेवार्चनेरत।
अश्वमेघमवाप्नोति पितृन्प्रीणातिशाश्वतम्।। वा. पु. 35/41
43. यत्राऽऽस्ते पुण्यरीकाक्षः शङ्खचक्रगदाधरः।
पीताम्बरधरः कृष्णः कंसकेशिनिषूदनः।। ब्रह्म पु. अ. 177/2
44. ये तत्र कृष्णं पश्यन्ति सुरागसुरनमस्कृतम्।।
सकर्षणं सुभद्रा च धन्यास्ते नात्र संशय।। ब्रह्म पु. अ. 177/3
45. प्रासादं पुरुषोत्तमस्य नृपतिः को नाम कर्तु।
क्षमस्तस्येत्याद्यनृपैरूपेक्षितमयं चक्रेऽथं गंगेश्वरः।। हिस्ट्री आव उड़ीसा, 1/251
46. शयनोल्थापने कृष्णं ये पश्यन्ति मनीषिणः।
हलायुधं सभुद्रां च हरेः स्थानं व्रजन्ति ते।।
सर्वकालेऽपि ये भक्त्या पश्यन्ति पुरुषोत्तमम्।
रौहिणेयं सुभद्रां च विष्णुलोकं व्रजन्ति ते।। ब्र.पु. 177/7–8
47. देह त्यजन्ति पुरुषास्तत्र ये पुरुषोतमे।
कल्पवृक्षं समासाद्य मुक्तास्ते नात्र संशयः।। ब्र. पु. 177/16
48. तपस्तप्त्वाऽन्यतीर्थेषु वर्षाणामयुतं नरः।
यदाप्नोति तदाप्नोति मासेन पुरुषोत्तमे।।
आस्ते यश्चतुरों मासान्वर्षिकान्पुरुषोत्तमे।
पृथिवीव्यास्तीर्थयात्रायाः फल प्राप्नोति चाधिकम्।। ब्र० पु० 177/9–71
49. तद्वत्स्नानं समुद्रस्य सर्वकाले प्रशस्यते।
पौर्णमास्यां विशेषेण हयमेधमफलं लभेत्।। ब्र. पु. 60/10
50. भूर्तधात्रीः महामाया भैरवः क्षीरकण्टकः।
युगाद्यायां महादेवी दक्षिणाङ्गुण्ठः पदो मम्।। तन्त्र० पीठ, 28
51. सतीतीर्थ कामाख्या, पांचाली, धरणी कान्त देवशमी, पृ. 89
52. कृतिवासकृत बंगला रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ. 203